Uma Pathak
Skt. Deptt.
Com. BA. III Yr.

## भाषा की परिभाषा एवं स्वरूप –

भाषा मानव व्यवहार का एक महत्वपूर्ण अंग है। भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए भाषा की आवश्यकता होती है। जन्म के बाद से ही मनुष्य रोकर, फिर अपने परिवार में व्यवहृत भाषा की ध्वन्यात्मक पुनरावृत्ति द्वारा अपनी भावनाएँ व्यक्त करता है। मानव विकास के साथ-साथ जहाँ पहले संकेत के द्वारा, फिर शब्द और आगे चलकर छोटे-छोटे वाक्यों द्वारा भाषा का काम लेता है। भाषा और व्यक्ति परस्पर पूरक हैं।

अपनी भाषा का प्रयोग मनुष्य के लिए इतना सहज, और स्वाभाविक है कि वह उसकी संरचना एवं क्रिया-विधि की और ध्यान ही नहीं देता। इसका मुख्य कारण है व्यक्ति की अपनी भाषा-संबंधी सूक्ष्म जानकारी के प्रति उदासीनता। वस्तुतः व्यक्ति का संबंध भाषा-प्रयोग से रहता है, भाषा संबंधी जानकारी से नहीं। बच्चा चलने-फिरने की स्वाभाविक प्रक्रि-। के ~~साम~~ समान ही अपने परिवेश में भाषा को सीखता है। यह सीखने की प्रक्रिया इतनी अलक्षित होती है कि वह जान भी नहीं पाता है और धीरे-धीरे भाषा और उच्चारण सीखता जाता है; पद और पदार्थ का तालमेल बैठाता जाता है।

किन्तु भाषा की आवश्यकता उससे भी आगे पड़ती है। शिक्षकों, लेखकों, मनोवैज्ञानिकों, समाजशास्त्रियों, इतिहास-कारों, संचार अभियन्ताओं आदि के अनेक वर्ग ऐसे हैं जिनके लिए भाषा-संबंधी जानकारी, भाषा-प्रयोग या उससे भी अधिक उपयोगी है। भाषा इनके लिए साधन है। रेडियो, टेलीविज़न, टेलीफोन, बेतार का तार आदि इन्हीं की देन हैं। एक तीसरा वर्ग, जिनके लिए भाषा प्रयोग-साधन से भी बढ़कर साध्य है- ये भाषा-शास्त्री या भाषा वैज्ञानिक कहे जाते हैं।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि – 'भाषा मनुष्य के विचार-विनिमय और अभिव्यक्ति का साधन है।'

Scanned with CamScanner

आधुनिक भाषा-विज्ञान में भाषा का अध्ययन वैज्ञानिक पद्धति से किया जाता है। भाषा की परिभाषा करते हुए निम्नलिखित मूल बातों को भुलाया नहीं जा सकता —

(1) भाषा — प्रयोक्ता के विचार को श्रोता या पाठक तक पहुंचाती है।

(2) भाषा एक मानव-समुदाय विशेष के विचार-संचार का माध्यम है, इसी में वह बोली और समझी जाती है।

(3) उच्चारण-अवयवों द्वारा उच्चरित ध्वनों का समूह भाषा है।

(4) भाषा-विशेष के निश्चित मान्यक्रम में उच्चरित ध्वन का समूह भाषा है।

(5) भाषा यादृच्छिक ध्वनों का समूह है।

(6) भाषा एक व्यवस्था है, जिसमें उसके सभी अंग मिलकर कार्य करते हैं।

प्रमुख भाषा-वैज्ञानिकों द्वारा दी गई परिभाषाओं को भाषा की उपर्युक्त कसौटी पर परख लेना आवश्यक है।

प्लेटो ने 'सोफिस्ट' में विचार और भाषा के संबंध में कहा — "विचार आत्मा की मूक या अध्वन्यात्मक बातचीत है पर जब वही ध्वन्यात्मक होकर होठों पर प्रकट होती है तो उसे भाषा की संज्ञा देते हैं।"

'स्वीट' के अनुसार 'ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा विचारों को प्रकट करना ही भाषा है।

'गुणे' का विचार है 'ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा हृदयगत भावों तथा विचारों का स्पष्टीकरण (प्रकटीकरण) भाषा है।

'जेस्परसन' के अनुसार — 'मनुष्य ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा अपना विचार प्रकट करता है। मानव-मस्तिष्क वस्तुतः विचार प्रकट करने के लिए ऐसे शब्दों का निरन्तर उपयोग करता है। इस प्रकार के कार्यकलाप को ही भाषा की संज्ञा दी जाती है।'